रागं: यमन् कल्याणि

ताळं: खण्डचापु

भावयामि गॊपालबालम् मन
सॆवितम् तत्पदं चिन्तयॆयम् सदा

1. कटिघटितमॆखलाखचितमणिघण्टिका
पटलनिनदॆन विभ्राजमानम्
कुटिलपदघटितसङ्कुल शिञ्जितॆ नतम्
चटुलनटनासमुज्वलविलासम्

2. निरतकर कलितनवनीतम् ब्रह्मादि
सुरनिकरभावनाशॊभितपदम्
तिरुवॆङ्कटाचलस्थित मनुपमं हरिम्
परमपुरुषं गॊपालबालम्